10/04/2024

शामिल विषय (TOPICS COVERED)

1. गुड़ी पड़वा (GS PAPER I: ए एंड सी)
2. हिग्स बोसोन (GS PAPER III: बेसिक साइंस)
3. उगादि (GS PAPER I: ए एंड सी)
4. जलवायु संकट लिंग तटस्थ नहीं है (10 अप्रैल) (GS PAPER I: सामाजिक न्याय, GS PAPER III: पर्यावरण)
5. एक विशिष्ट अधिकार: जलवायु परिवर्तन और प्रजाति संरक्षण पर (10 अप्रैल) (GS PAPER II: एफआर)
6. घोर कुप्रबंधन: टीबी दवा की कमी और भारत के राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रम पर (10 अप्रैल) (GS PAPER II: स्वास्थ्य क्षेत्र)
7. कोलकाता के बाईपास शहरीकरण का गलियारा (GS PAPER I: शहरीकरण)

PatriotICAS

गुड़ी पड़वा (GS PAPER I: ए एंड सी)

- गुड़ी पड़वा एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो मुख्य रूप से भारतीय राज्यों **महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के कुछ हिस्सों में मनाया जाता है।**
- यह **चंद्र-सौर हिंदू कैलेंडर के अनुसार पारंपरिक नए साल की शुरुआत का प्रतीक है** ।
- यह त्यौहार चैत्र माह के पहले दिन **(मार्च-अप्रैल के आसपास) पड़ता है।** और भारत के अन्य हिस्सों (उगादी, चेटी चंद, नवरेह , आदि) में इसी तरह के नए साल के त्योहारों के जश्न के साथ मेल खाता है।

प्रतीकों

- **गुड़ी:** गुड़ी त्योहार का केंद्रीय प्रतीक है। यह बांस की छड़ी पर फहराया गया एक चमकीला कपड़ा है, जो आम और नीम के पत्तों, फूलों और चीनी क्रिस्टल (गाथी) की माला से सजाया गया है। इसके ऊपर उलटा हुआ तांबे या चांदी का बर्तन रखा जाता है।
- **विजय:** गुड़ी विजय और समृद्धि का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि यह बुराई को दूर करता है, सौभाग्य लाता है और एक समृद्ध वर्ष की शुरुआत करता है।

- **पौराणिक महत्व:** इस त्यौहार से जुड़ी कई किंवदंतियाँ हैं, जिनमें इस दिन भगवान ब्रह्मा द्वारा ब्रह्मांड का निर्माण करना और रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद भगवान राम की अयोध्या में विजयी वापसी शामिल है।

समारोह

- **रंगोली:** दरवाजे पर रंगीन पैटर्न (रंगोली) बनाना ।
- **पारंपरिक पोशाक:** लोग उत्सव के कपड़े पहनते हैं।
- **विशेष भोजन:** पारंपरिक महाराष्ट्रीयन व्यंजन जैसे पूरन पोली (मीठा फ्लैटब्रेड), श्रीखंड (मीठा दही) आदि तैयार किए जाते हैं।
- **जुलूस:** कुछ स्थानों पर जुलूस और सभाएँ आयोजित की जाती हैं।

हिग्स बोसोन (GS PAPER III: बेसिक साइंस)

- **प्राथमिक कण:** हिग्स बोसोन कण भौतिकी के मानक मॉडल के अंतर्गत एक मौलिक कण है। इसे प्रायोगिक तौर पर 2012 में लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर (CERN) में खोजा गया था।
- **हिग्स फील्ड:** हिग्स बोसोन हिग्स फील्ड के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है, एक ऊर्जा क्षेत्र जो पूरे अंतरिक्ष में व्याप्त है। यह क्षेत्र ही कुछ अन्य मूलभूत कणों को उनका द्रव्यमान देता है।
- **"द गॉड पार्टिकल"** : हमारे ब्रह्मांड के मूलभूत निर्माण खंडों को समझने में इसके महत्व के कारण, इसे कभी-कभी "द गॉड पार्टिकल" का उपनाम भी दिया जाता है, यह शब्द मुख्य रूप से लोकप्रिय मीडिया द्वारा गढ़ा गया है।

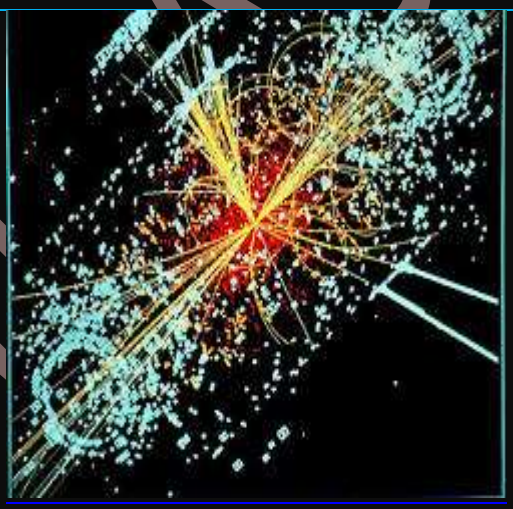

हिग्स बोसोन क्यों महत्वपूर्ण है?

- **द्रव्यमान की उत्पत्ति:** हिग्स बोसोन यह समझाने में मदद करता है कि क्यों कुछ कणों में द्रव्यमान होता है और अन्य में नहीं। हिग्स क्षेत्र के बिना, ब्रह्मांड, जैसा कि हम जानते हैं, अस्तित्व में नहीं होता।

हिग्स बोसोन की खोज कैसे हुई?

- **लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर (एलएचसी):** दुनिया के सबसे शक्तिशाली कण त्वरक, लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर का उपयोग करके सीईआरएन (यूरोपीय परमाणु अनुसंधान संगठन) में इसका पता लगाया गया था।
- **कण टकराव:** वैज्ञानिकों ने हिग्स बोसोन के हस्ताक्षरों की पहचान करने के लिए अरबों उच्च-ऊर्जा कण टकरावों के डेटा का विश्लेषण किया

उगादि (GS PAPER I: ए एंड सी)

- उगादि **भारत के दक्कन क्षेत्र, मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक राज्यों के लोगों के लिए पारंपरिक नव वर्ष का प्रतीक है।**
- "उगादि" नाम संस्कृत के शब्द "युग" (उम्र) और "आदि" (शुरुआत) से लिया गया है, जो एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है।

Patriot IAS

- यह **हिंदू चंद्र कैलेंडर में चैत्र महीने के पहले दिन पड़ता है** , जो आमतौर पर ग्रेगोरियन कैलेंडर में मार्च या अप्रैल के साथ मेल खाता है।

प्रतीकों

- उगादी एक नई शुरुआत, अतीत से मुक्ति और आने वाले वर्ष के लिए आशा को अपनाने का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह सृजन, संरक्षण और परिवर्तन के चक्र का प्रतीक है।

समारोह

उगादी उत्सव में आम तौर पर निम्नलिखित शामिल होते हैं:

- **घर की तैयारी:** घरों की सफाई और सजावट, प्रवेश द्वार पर रंगीन रंगोली (पैटर्न) बनाना।
- **अनुष्ठान:** तेल से स्नान, नए कपड़े पहनना, विशेष प्रार्थनाएँ और मंदिर के दर्शन।
- उगादि पचड़ी : छह अलग-अलग स्वादों (मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, तीखा, कसैला) से तैयार एक अनोखा व्यंजन, जो जीवन के मिश्रित अनुभवों का प्रतीक है।
- **पंचांग श्रवणम् :** भविष्यवाणियों के साथ नये साल का पंचांग पढ़ना।
- **उत्सव का भोजन:** पारिवारिक समारोह और पारंपरिक व्यंजनों के साथ साझा भोजन।

जलवायु संकट लिंग तटस्थ नहीं है (10 अप्रैल) (GS PAPER I: सामाजिक न्याय, GS PAPER III: पर्यावरण)

जबकि जलवायु कार्रवाई के लिए जनसंख्या की 100% भागीदारी की आवश्यकता है, वहीं, महिलाओं को सशक्त बनाने का मतलब बेहतर जलवायु समाधान होगा

- जलवायु संकट हर किसी को अलग तरह से प्रभावित करता है, महिलाओं और लड़कियों को गरीबी, मौजूदा भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक मानदंडों के कारण अत्यधिक स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता है।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के अनुसार, **किसी आपदा में पुरुषों की तुलना में महिलाओं और बच्चों के मरने की संभावना 14 गुना अधिक होती है।**

यूएनडीपी

- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) अंतरराष्ट्रीय विकास पर केंद्रित प्रमुख संयुक्त राष्ट्र एजेंसी है। यह **गरीबी उन्मूलन, असमानताओं को कम करने और लचीलापन बनाने के लिए काम करता है,** जिससे देशों को सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने में मदद मिलती है।

यूएनडीपी का कार्य तीन मुख्य स्तंभों पर केंद्रित है :

1. **सतत विकास:** देशों को समावेशी तरीकों से आर्थिक विकास हासिल करने, ग्रह की रक्षा करने और भविष्य के झटकों के खिलाफ लचीलापन बनाने में सहायता करता है।
2. **लोकतांत्रिक शासन और शांति स्थापना:** लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करने, शांति और संघर्ष समाधान को बढ़ावा देने और निर्णय लेने में समावेशी भागीदारी का समर्थन करने में मदद करता है।
3. **जलवायु और आपदा लचीलापन:** देशों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ढलने, उनके आपदा जोखिम को कम करने और स्वच्छ, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन करने में सहायता करता है।

यूएनडीपी कैसे संचालित होता है

- **वैश्विक नेटवर्क:** यूएनडीपी के लगभग 170 देशों और क्षेत्रों में कार्यालय हैं, जो जमीनी स्तर पर सहायता और स्थानीय विशेषज्ञता प्रदान करते हैं।
- **नीति सलाह:** विकास लक्ष्यों के अनुरूप नीतियों को विकसित करने और लागू करने के लिए सरकारों के साथ काम करता है।

Patriot IAS

- **क्षमता निर्माण:** विकासशील देशों में संस्थानों और व्यक्तियों को उनकी विकास पहलों का स्वामित्व लेने के लिए मजबूत करता है।
- **साझेदारी:** सरकारों, अन्य संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, नागरिक समाज, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करता है अपने मिशन को हासिल करने के लिए.

फंडिंग:

- यूएनडीपी को मुख्य रूप से संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों के स्वैच्छिक योगदान से वित्त पोषित किया जाता है।

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय (एमसी मेहता बनाम भारत संघ एवं अन्य , 2024 में) ने हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने के लोगों के अधिकार को मान्यता दी है , स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया है। जीवन के लिए।
- कृषि के लिए महत्वपूर्ण है भारत में महिलाओं की आजीविका, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। जलवायु-संबंधित फसल उपज में कमी से खाद्य असुरक्षा बढ़ती है, विशेष रूप से उच्च पोषण संबंधी कमी वाले गरीब परिवारों पर इसका प्रभाव पड़ता है।
- छोटे और सीमांत भूमिधारक परिवारों में, पुरुषों को अवैतनिक ऋण के कारण सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ सकता है, जिसके कारण प्रवासन, भावनात्मक संकट और कभी-कभी आत्महत्या भी हो सकती है। दूसरी ओर, महिलाएं घरेलू काम के भारी बोझ, खराब स्वास्थ्य और अधिक अंतरंग साथी हिंसा का अनुभव करती हैं।
- **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) 4 और 5 डेटा** पता चला कि पिछले दशक में सूखाग्रस्त जिलों की तुलना में सूखाग्रस्त जिलों में रहने वाली महिलाओं का वजन अधिक था, उन्हें अधिक अंतरंग साथी हिंसा का सामना करना पड़ा और लड़कियों की शादी का प्रचलन अधिक था।
- बढ़ती खाद्य और पोषण संबंधी असुरक्षा, काम का बोझ और आय की अनिश्चितताएं महिलाओं के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

चरम घटनाएँ और लिंग आधारित हिंसा

- दुनिया लगातार चरम मौसम की घटनाओं और जलवायु-प्रेरित प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रही है।
- ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) की एक रिपोर्ट में पाया गया कि 75% भारतीय जिले बाढ़, सूखा और चक्रवात जैसी जलविद्युत आपदाओं के प्रति संवेदनशील हैं।

ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्ल्यू)

- ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) एशिया के अग्रणी **गैर-लाभकारी नीति अनुसंधान संस्थानों में से एक है** । यह ऊर्जा, स्वच्छ हवा, पानी और भूमि तक पहुंच पर गंभीर वैश्विक चुनौतियों का रणनीतिक रूप से समाधान करता है।

केंद्र बिंदु के क्षेत्र

CEEW का अनुसंधान और सलाहकार कार्य स्थिरता क्षेत्र के व्यापक स्पेक्ट्रम को कवर करता है :

- **ऊर्जा:** स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन, बिजली बाजार, ऊर्जा पहुंच, औद्योगिक डीकार्बोनाइजेशन, नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा वित्त।
- **पर्यावरण:** जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन, वायु प्रदूषण, वन, जैव विविधता और संसाधन दक्षता।
- **जल:** जल संसाधन प्रबंधन, जल-ऊर्जा-खाद्य गठजोड़, WASH (जल, स्वच्छता और स्वच्छता)।
- **अन्य क्षेत्र:** शहरीकरण, प्रौद्योगिकी नवाचार, टिकाऊ वित्त और रणनीतिक मामले।

CEEW कैसे काम करता है

PatriotIAS

- **अनुसंधान:** चुनौतियों का आकलन करने और समाधानों की पहचान करने के लिए कठोर, डेटा-संचालित अनुसंधान आयोजित करता है।
- **नीति प्रभाव:** साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण की जानकारी देने के लिए राष्ट्रीय, राज्य और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माताओं के साथ जुड़ता है।
- **क्षमता निर्माण: स्थिरता क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवरों के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान करता है।**
- **आउटरीच:** निष्कर्षों को संप्रेषित करता है और प्रकाशनों, आयोजनों, सम्मेलनों और साझेदारियों के माध्यम से जनता के साथ जुड़ता है।

मुख्य सफलतायें

सीईईडब्ल्यू के पास महत्वपूर्ण योगदान का ट्रैक रिकॉर्ड है। यहाँ एक छोटा सा नमूना है:

- भारत की राष्ट्रीय विद्युत योजना के डिजाइन में योगदान दिया।
- भारत के राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) को आकार देने में भूमिका निभाई।
- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की संकल्पना को साकार करने में मदद की।
- स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन तक पहुंच में सुधार पर शोध ने भारत की प्रमुख उज्ज्वला योजना को प्रभावित किया है।
- भारत का पहला नवीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्र (आरईसी) बाज़ार डिज़ाइन किया गया।

- एनएफएचएस 5 के आंकड़ों से पता चला कि इन जिलों में आधे से अधिक महिलाएं और बच्चे जोखिम में हैं।
- अध्ययन प्राकृतिक आपदाओं और महिलाओं के खिलाफ लिंग आधारित हिंसा के बीच सीधा संबंध दिखाते हैं।
- **चरम मौसम की घटनाओं और जल चक्र पैटर्न में बदलाव से सुरक्षित पेयजल तक पहुंच प्रभावित होती है, महिलाओं का कार्यभार बढ़ता है और उत्पादक कार्य और स्वास्थ्य देखभाल के लिए समय कम हो जाता है।**
- पिछला दशक अब तक का सबसे गर्म दशक दर्ज किया गया है, जिसमें भारत को अभूतपूर्व हीटवेव का सामना करने की संभावना है।
- लंबे समय तक गर्मी गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों और बुजुर्गों के लिए जोखिम पैदा करती है, जिससे **समय से पहले जन्म और अन्य जटिलताओं की संभावना बढ़ जाती है।**
- **घर के अंदर और बाहर दोनों जगह वायु प्रदूषण, महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, श्वसन और हृदय संबंधी बीमारियों का कारण बनता है, और अजन्मे बच्चों के शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है।**
- जलवायु परिवर्तन महिलाओं के कुछ उप-समूहों को असंगत रूप से प्रभावित करता है, जिससे उनकी कमजोरियों पर अधिक साक्ष्य की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ता है।
- वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के पेरिस समझौते के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जलवायु कार्रवाई में सभी की भागीदारी की आवश्यकता है।
- **महिलाओं को सशक्त बनाने से बेहतर जलवायु समाधान प्राप्त होते हैं, जैसा कि कृषि उपज में वृद्धि के रूप में देखा जाता है जब महिलाओं को संसाधनों तक समान पहुंच मिलती है।**
- आदिवासी और ग्रामीण महिलाएं अक्सर पर्यावरण संरक्षण प्रयासों में अग्रणी होती हैं।
- **महिलाओं और महिला समूहों को ज्ञान, उपकरण और संसाधन प्रदान करना जलवायु चुनौतियों के स्थानीय समाधान को प्रोत्साहित करता है।**
- **अनुकूलन उपायों को विभिन्न संदर्भों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए,** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच गर्मी के जोखिम, वायु प्रदूषण और पानी और भोजन तक पहुंच में भिन्नता पर विचार करना।

लू और पानी की कमी पर

PatriotIAS

- **बाहरी श्रमिकों, गर्भवती महिलाओं, शिशुओं, बच्चों और बुजुर्गों जैसे कमजोर समूहों पर लंबे समय तक गर्मी** के प्रभाव को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है ।
- लू के दौरान अत्यधिक मौतें होती हैं, जिससे उत्पादकता और अर्थव्यवस्था पर असर पड़ता है।
- **शहरी स्थानीय निकायों, नगर निगमों और कमजोर जिलों में जिला अधिकारियों के पास योजनाएँ होनी चाहिए और कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए।**
- **गर्मी से संबंधित मौतों को कम करने के उपायों में हीटवेव की चेतावनी, बाहरी काम और स्कूल के समय को समायोजित करना, स्वास्थ्य सुविधाओं में शीतलन कक्ष स्थापित करना, सार्वजनिक पेयजल सुविधाएं प्रदान करना और हीटस्ट्रोक के लिए तत्काल उपचार शामिल हैं।**
- दीर्घकालिक कार्रवाइयों में वृक्षों का आवरण बढ़ाने, कंक्रीट को कम करने, हरे-नीले स्थान बनाने और गर्मी-लचीले आवास डिजाइन करने की शहरी योजना शामिल है।
- उदयपुर में महिला हाउसिंग ट्रस्ट ने प्रदर्शित किया **कि कम आय वाले घरों की छतों को परावर्तक सफेद रंग से रंगने से घर के अंदर का तापमान कम हो सकता है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।**
- पानी की कमी एक बड़ा ख़तरा है, जिसके लिए सामाजिक कार्रवाई की आवश्यकता है।
- भारत में ऐतिहासिक रूप से उन्नत वर्षा जल संचयन और भंडारण प्रणालियाँ थीं।
- **तमिलनाडु में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन** जैसी परियोजनाएं जल स्रोतों को मैप करने, कमजोरियों की पहचान करने और सरकारी योजनाओं और संसाधनों का उपयोग करके बेहतर जल पहुंच के लिए स्थानीय योजनाएं विकसित करने के लिए भौगोलिक सूचना प्रणालियों का उपयोग करती हैं।

ग्रामीण स्तर पर काम कर रहे हैं

- कार्यों की प्राथमिकता के साथ-साथ क्षेत्रों और सेवाओं का प्रभावी अभिसरण, गांव या पंचायत स्तर पर सबसे अच्छा हासिल किया जाता है।
- **पंचायत और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण के साथ-साथ पंचायतों को शक्तियों और वित्त का हस्तांतरण, समुदाय के नेतृत्व वाले और भागीदारीपूर्ण तरीके से भारत के लचीलेपन-निर्माण के दृष्टिकोण को प्रदर्शित कर सकता है।**
- जलवायु परिवर्तन पर राज्य-कार्य योजनाओं में महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को व्यापक रूप से संबोधित करने के लिए लिंग लेंस को शामिल करना चाहिए।
- **जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय और राज्य कार्य योजनाएँ (एनएपीसीसी और एसएपीसीसी)** लैंगिक गतिशीलता की गहराई में गए बिना अक्सर महिलाओं को पीड़ित के रूप में चित्रित किया जाता है।
- 28 एसएपीसीसी की समीक्षा में परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की कमी का पता चला, जिसमें कुछ ने महिलाओं को परिवर्तन के एजेंट के रूप में मान्यता दी।
- एसएपीसीसी को संशोधित करने की सिफारिशें रूढ़िवादिता से परे जाने, सभी लिंगों की कमजोरियों को पहचानने और व्यापक और न्यायसंगत जलवायु अनुकूलन के लिए लिंग-परिवर्तनकारी रणनीतियों को लागू करने पर जोर देती हैं।
- लेबल नहीं किया जाना चाहिए बल्कि उन्हें जलवायु कार्रवाई प्रयासों में नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए।

मुख्य व्यावहारिक प्रश्न: GS PAPER I: समाज, सामाजिक न्याय। GS PAPER III: पर्यावरण

PatriotICAS

सवाल: जलवायु कार्रवाई में महिलाओं की भूमिका और जलवायु संबंधी प्रभावों के प्रति उनकी संवेदनशीलता का आकलन करें, जैसा कि जलवायु संकट के संदर्भ में उजागर किया गया है। (150 शब्द/10 अंक)

उत्तर दृष्टिकोण

- महिलाओं, जलवायु परिवर्तन और जलवायु कार्रवाई के बीच जटिल संबंधों को रेखांकित करते हुए परिचय दीजिए।
- फिर जलवायु कार्रवाई में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालें
- आगे जलवायु प्रभावों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता पर चर्चा करें
- फिर सिफ़ारिशें लाएँ: समानता और लचीलेपन की ओर
- महिलाओं और लड़कियों की आवाज़, अनुभव और नेतृत्व को केन्द्रित किए बिना जलवायु न्याय प्राप्त करना असंभव है ।

उत्तर

लिंग और जलवायु परिवर्तन का प्रतिच्छेदन एक जटिल संबंध को उजागर करता है जहां महिलाएं इसके प्रभावों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता का सामना करते हुए जलवायु कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। समावेशी और प्रभावी जलवायु नीतियों और पहलों को तैयार करने के लिए इन गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है।

जलवायु कार्रवाई में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका:

- महिलाएं अक्सर प्राकृतिक संसाधनों की प्रमुख प्रबंधक और अपने समुदायों के भीतर टिकाऊ प्रथाओं की एजेंट होती हैं।
- स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों और पारंपरिक प्रथाओं का उनका ज्ञान उन्हें अनुकूलन और शमन प्रयासों में अमूल्य योगदानकर्ता बनाता है।
- इसके अलावा, महिलाओं को आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने से निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करने और जलवायु-लचीली नीतियों की वकालत करने की उनकी क्षमता बढ़ती है।
- अध्ययनों से पता चला है कि महिलाओं की भागीदारी से संसाधन प्रबंधन और जलवायु पहल में अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ परिणाम मिलते हैं।

जलवायु प्रभावों के प्रति बढ़ी संवेदनशीलता:

- अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, मौजूदा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और सांस्कृतिक मानदंडों के कारण महिलाएं जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित होती हैं।
- जलवायु-प्रेरित आपदाएँ लैंगिक असमानताओं को बढ़ाती हैं, महिलाओं और लड़कियों को मृत्यु और रुग्णता के उच्च जोखिम का सामना करना पड़ता है।
- गरीबी, संसाधनों तक सीमित पहुंच और प्रतिबंधित गतिशीलता जैसे कारक उनकी भेद्यता को और बढ़ा देते हैं। उदाहरण के लिए, सूखाग्रस्त क्षेत्रों में महिलाओं को खाद्य असुरक्षा, कुपोषण और अंतरंग साथी हिंसा का अनुभव होता है।
- ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) के अध्ययन भारत में हाइड्रोमेट आपदाओं के गंभीर प्रभावों और बढ़ती लिंग आधारित हिंसा से उनके संबंध को उजागर करते हैं।
- लंबे समय तक चलने वाली गर्म लहरें महिलाओं, विशेषकर गर्भवती महिलाओं के साथ-साथ बच्चों और बुजुर्गों को भी खतरे में डालती हैं।

सिफ़ारिशें: समानता और लचीलेपन की ओर

- जलवायु संकट के लैंगिक प्रभाव को कम करने और एक स्थायी भविष्य प्राप्त करने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

PathfinderIAS

- **लिंग-उत्तरदायी जलवायु नीतियां:** राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर नीतियों को महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने और अनुकूलन और शमन रणनीतियों से उनके लाभ सुनिश्चित करने के लिए लिंग विश्लेषण को एकीकृत करना चाहिए।
- **महिला सशक्तिकरण:** महिलाओं की शिक्षा, नेतृत्व के अवसरों और भूमि, प्रौद्योगिकी और वित्त जैसे संसाधनों तक पहुंच को बढ़ावा देना परिवर्तन लाने और जलवायु झटके झेलने की उनकी क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है।
- **स्थानीय समाधान, महिला नेतृत्व:** महिला हाउसिंग ट्रस्ट जैसी परियोजनाएं प्रदर्शित करती हैं कि महिलाओं के नेतृत्व वाले समाधान, छत को ठंडा करने से लेकर वर्षा जल संचयन तक, लचीलापन पैदा कर सकते हैं। ऐसी पहलों में निवेश करना महत्वपूर्ण है।
- **समावेशी भागीदारी:** स्थानीय योजना से लेकर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता तक, जलवायु संबंधी सभी निर्णय लेने में महिलाओं की आवाज़ सुनी जानी चाहिए।

इस प्रकार , जलवायु न्याय प्राप्त करने के लिए महिलाओं और लड़कियों की आवाज़, अनुभव और नेतृत्व को केंद्रित करना आवश्यक है। लचीले और टिकाऊ समुदायों के निर्माण के लिए जलवायु कार्रवाई में उनकी सक्रिय भागीदारी अपरिहार्य है। हालाँकि, जलवायु भेद्यता में लैंगिक असमानताओं को संबोधित करने और महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए नीति, संस्थागत और सामुदायिक स्तरों पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में महिलाओं की क्षमता को पहचानने और उसका उपयोग करके, समाज अधिक न्यायसंगत और जलवायु-लचीले भविष्य की दिशा में रास्ता बना सकता है।

एक विशिष्ट अधिकार: जलवायु परिवर्तन और प्रजाति संरक्षण पर (10 अप्रैल) (GS PAPER II: एफआर)

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से मुक्त होने का अधिकार संरक्षण संबंधी दुविधा के बीच आता है

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने के अधिकार को एक विशिष्ट मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी है।
- इस अधिकार को संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत स्वच्छ वातावरण में रहने के अधिकार के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता है।
- अदालत इस बात पर जोर देती है कि जलवायु परिवर्तन से बढ़ते तापमान, तूफान, सूखा, भोजन की कमी और बीमारियों में बदलाव, जीवन पर असर और समानता के अधिकार का उल्लंघन जैसे खतरे पैदा होते हैं।
- **सौर ऊर्जा पारेषण लाइनों के साथ टकराव से ग्रेट इंडियन बस्टर्ड** की सुरक्षा से संबंधित मामला मुद्दे की ओर ध्यान दिलाया.
- अदालत को तीन केंद्रीय मंत्रालयों की याचिका का सामना करना पड़ा, जिसमें बस्टर्ड की सुरक्षा के उद्देश्य से पहले के आदेश में संशोधन की मांग की गई थी।

PatriotICAS

- मूल **आदेश में चिन्हित क्षेत्रों में लो-वोल्टेज लाइनों को भूमिगत बिछाने और हाई-वोल्टेज लाइनों को स्थानांतरित करने का निर्देश दिया गया था, जिससे तकनीकी और वित्तीय चुनौतियों के कारण नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के लिए चिंताएँ पैदा हो गईं।**
- कोर्ट ने अपने पहले के आदेशों को वापस लेते हुए अंडरग्राउंड और ओवरग्राउंड लाइनों की सीमा तय करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है।
- यह स्थिति एक पहेली को उजागर करती है जहां देश के कार्बन पदचिह्न को कम करना एक लुप्तप्राय प्रजाति की रक्षा के साथ टकराता है।
- इन परस्पर विरोधी लक्ष्यों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए त्वरित समाधान की आवश्यकता है।

घोर कुप्रबंधन: टीबी दवा की कमी और भारत के राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रम पर (10 अप्रैल) (GS PAPER II: स्वास्थ्य क्षेत्र)

तपेदिक पर नियंत्रण के प्रयासों में भारत पिछड़ रहा है

- **भारत का लक्ष्य 2025 तक तपेदिक (टीबी) को "खत्म" करना है** , लेकिन दवा-संवेदनशील टीबी सहित टीबी दवाओं की कमी के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

क्षय रोग (टीबी)

- टीबी एक गंभीर संक्रामक रोग है जो *माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस जीवाणु के कारण होता है*। यह मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है, लेकिन शरीर के अन्य हिस्सों को भी संक्रमित कर सकता है।
- **संचरण:** टीबी हवा के माध्यम से तब फैलता है जब सक्रिय टीबी रोग से पीड़ित व्यक्ति खांसता है, छींकता है या बात करता है, जिससे बैक्टीरिया युक्त छोटी बूंदें निकलती हैं।

टीबी रोग के लक्षण:

- लगातार खांसी (3 सप्ताह या उससे अधिक समय तक)
- खांसी के साथ खून या बलगम आना
- छाती में दर्द
- अस्पष्टीकृत वजन घटना
- थकान
- बुखार
- रात का पसीना

मल्टीड्रग-प्रतिरोधी टीबी (एमडीआर-टीबी)

PrimeIAS

- एमडीआर-टीबी टीबी का एक रूप है जो कम से कम दो सबसे शक्तिशाली प्रथम-पंक्ति एंटी-टीबी दवाओं के प्रति प्रतिरोधी है : **आइसोनियाज़िड और रिफैम्पिसिन।**
- यह नियमित टीबी के अनुचित या अपूर्ण उपचार के कारण विकसित होता है, या जब कोई व्यक्ति ऐसे तनाव से संक्रमित हो जाता है जो पहले से ही दवाओं के प्रति प्रतिरोधी है।
- एमडीआर-टीबी का इलाज करना अधिक कठिन और महंगा है, इसके लिए दूसरी पंक्ति की दवाओं के साथ लंबे समय तक उपचार की आवश्यकता होती है जिसके अधिक गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

टीबी का वैश्विक प्रभाव

- टीबी दुनिया की सबसे घातक संक्रामक बीमारियों में से एक बनी हुई है।
- 2021 में, अनुमानित 10.6 मिलियन लोग टीबी से बीमार पड़े, और 1.6 मिलियन लोग इस बीमारी से मर गए (डब्ल्यूएचओ)।
- एमडीआर-टीबी एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा है, 2021 (डब्ल्यूएचओ) में वैश्विक स्तर पर लगभग 450,000 नए मामले सामने आए हैं।

टीबी का निदान

- टीबी बैक्टीरिया के प्रति प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया का पता लगाने के लिए त्वचा परीक्षण (ट्यूबरकुलिन त्वचा परीक्षण - टीएसटी) या रक्त परीक्षण (इंटरफेरॉन-गामा रिलीज परख- आईजीआरए)।
- टीबी बैक्टीरिया की उपस्थिति के लिए नमूनों की जांच करने के लिए बलगम परीक्षण।
- फेफड़ों में असामान्यताओं की जांच के लिए छाती का एक्स-रे।
- विशिष्ट एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोध निर्धारित करने के लिए औषधि संवेदनशीलता परीक्षण (डीएसटी)।

टीबी का इलाज

- मानक टीबी उपचार में चार एंटीबायोटिक दवाओं के संयोजन का 6 महीने का कोर्स शामिल होता है।
- एमडीआर-टीबी के लिए लंबी अवधि (20 महीने या उससे अधिक) तक दूसरी पंक्ति की दवाओं से उपचार की आवश्यकता होती है। कुछ मामलों में नए, छोटे नियम उपलब्ध हैं।
    - टीबी दवाओं की कमी लगातार बनी हुई है, दवा आपूर्ति में बार-बार व्यवधान आ रहा है।
    - अतीत में, मल्टीड्रग-प्रतिरोधी टीबी (एमडीआर-टीबी) के लिए **डेलामानिड जैसी महत्वपूर्ण दवाओं की भारी कमी थी ,** जो लगभग एक वर्ष तक चली थी।
    - समय पर निदान और उपचार शुरू करने के साथ-साथ टीबी रोगियों के उपचार की सफलता के लिए दवा की उपलब्धता आवश्यक है।
    - टीबी दवाओं की कमी के कारण उपचार शुरू होने में देरी हो सकती है और रोगियों के बीच अनुपालन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।
    - लक्ष्य तिथि के करीब होने के बावजूद, भारत में अभी भी देश के कई खिलाड़ियों द्वारा निर्मित दवा-संवेदनशील टीबी दवाओं की कमी है।
    - का नाम बदलकर **राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम करना** दवा की उपलब्धता जैसे बुनियादी मुद्दों को संबोधित किए बिना इसे अक्षमता के रूप में देखा जाता है।
    - स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा अंतिम समय में राज्यों को स्थानीय स्तर पर दवाएँ खरीदने की अनुमति देना क्षेत्र स्तर पर चुनौतियाँ पैदा करता है।
    - हाल ही में स्वास्थ्य मंत्रालय का एक परिपत्र राज्यों को दवा आपूर्ति में संभावित देरी के कारण तीन महीने के लिए स्थानीय स्तर पर दवाएं खरीदने की अनुमति देता है।
    - **यदि जिला स्वास्थ्य सुविधाएं मुफ्त दवाएं उपलब्ध कराने में विफल रहती हैं, तो रोगियों को स्वयं दवाएं खरीदनी पड़ सकती हैं, जो गरीब सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण है।**
    - भारत का टीबी नियंत्रण प्रबंधन अपर्याप्त प्रतीत होता है, और देश **टीबी उन्मूलन के अपने 2025 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं दिखता है।**

Patriot IAS

कोलकाता के बाईपास शहरीकरण का गलियारा (GS PAPER I: शहरीकरण)

(10 अप्रैल)

शहरी ढांचागत विकास ने सामाजिक और वर्ग पहचान के आधार पर एकीकरण के बजाय अलगाव पैदा कर दिया है

- भारत में शहरीकरण तीन मुख्य कारकों से प्रभावित हुआ है: उपनिवेशवाद, हरित क्रांति और नवउदारीकरण ।
- उपनिवेशवाद ने भारत में शहरी स्थानों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, शहरों का निर्माण स्वतंत्रता के बाद 1960 के दशक तक जारी रहा।
- 1970 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति और 1990 के दशक में नवउदारवादी नीतियों ने शहरी स्थानों को और अधिक समेकित किया, जिससे तेजी से शहरीकरण हुआ।
- चेन्नई, मुंबई और कोलकाता जैसे महानगरीय शहर, जो औपनिवेशिक शहरीकरण के उत्पाद थे, बाद के वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।
- हरित क्रांति और नवउदारवादी नीतियों से उत्पन्न धन से प्रेरित होकर, बढ़ती आबादी और उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए इन शहरों का काफी विस्तार हुआ।
- हालाँकि, धन वितरण में असमानताओं के साथ, शहरी विस्तार असमान रूप से हुआ।
- उपभोक्ता संस्कृति के नए रूपों के आगमन ने इन शहरी क्षेत्रों में आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं।

एक शहर के भीतर एक शहर

- आजादी के बाद के शुरुआती वर्षों में, राज्य सरकार ने कलकत्ता को उलझा हुआ, भीड़भाड़ वाला और खस्ताहाल बताया था।
- **कलकत्ता के भीतर साल्ट लेक सिटी** बनाने का एक राजनीतिक निर्णय लिया गया , जिसकी कल्पना एक स्वच्छ शहर के रूप में की गई थी।
- कलकत्ता में मौजूदा चुनौतियों में **गरीबी, यातायात और शासन के मुद्दों के साथ-साथ पानी, स्वच्छता और मलिन बस्तियों जैसे खराब बुनियादी ढांचे शामिल थे।**
- राज्य ने 1980 के दशक में कोलकाता के विभिन्न हिस्सों को जोड़ते हुए पूर्वी मेट्रोपॉलिटन बाईपास (ईएम बाईपास) का निर्माण करके शहर का और विकास किया।
- एमएए फ्लाईओवर और ईएम बाईपास सड़कों जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उद्देश्य भीड़भाड़ को कम करना और यातायात प्रवाह में सुधार करना है।
- इन विकासों से वस्तुओं, लोगों और विचारों की आवाजाही में वृद्धि जैसे लाभ हुए, लेकिन नई चुनौतियाँ भी सामने आईं।
- अर्थशास्त्री कल्याण सान्याल और राजेश भट्टाचार्य ने देखा कि शहरीकरण के इस दृष्टिकोण ने पुराने को उत्पादकों और उपभोक्ताओं के एक नए वर्ग के साथ बदल दिया।
- इससे स्वामित्व और पहचान का सवाल खड़ा हो गया: 'यह किसका शहर है?'

Patriot IAS

'शहरी बहिष्कृत'

- **कोलकाता में बाईपास का 40 किलोमीटर का हिस्सा सात सितारा होटल, लक्जरी अपार्टमेंट, क्लब, स्कूल, अस्पताल और मॉल जैसी लक्जरी सुविधाओं से सुसज्जित है।**
- **बाईपास के आसपास बनाया गया यह इको सिस्टम विशेष रूप से अमीर लोगों की जरूरतों को पूरा करता है, जिससे एक सामाजिक-स्थानिक पदानुक्रमित प्रणाली का निर्माण होता है।**
- बाईपास के किनारे ऊंचे-ऊंचे परिसर अक्सर आय समूहों के आधार पर ब्लॉकों को अलग करते हैं, जो शहरी संकट और कलंक में योगदान करते हैं।
- इन लक्जरी क्षेत्रों के बाहर रहने वाले सामाजिक समूहों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, **वे शहरी बहिष्कृत बन जाते हैं** , जैसा कि समाजशास्त्री लोइक वेक्वांट द्वारा वर्णित है।
- निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासी, जिन्हें पाड़ा कहा जाता है, अभाव, अधीनता और असमानता का अनुभव करते हैं, जिससे उनका सामाजिक जीवन बाधित होता है।
- बुर्जुआ पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और सार्वजनिक नीतियों द्वारा संचालित शहरीकरण की वृद्धि ने अभिजात वर्ग की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक सेवा वर्ग और श्रम बाजार का निर्माण किया है।
- रियल एस्टेट विकास ने लक्जरी कॉन्डो और झोंपड़ी घरों के बीच मेल-जोल पैदा कर दिया है, जिससे जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर शहरी हाशिये पर स्थिति बढ़ गई है।
- कोलकाता के उपनिवेशवाद विरोधी और साम्यवादी आंदोलनों का इतिहास इसे समकालीन शहरी गतिशीलता की जांच के लिए एक महत्वपूर्ण केस अध्ययन बनाता है।
- "बाईपास शहरीकरण" की अवधारणा सड़कों या बाईपास के निकट या समानांतर छिटपुट या विरल विकास को संदर्भित करती है, जो शहरी अध्ययन में धीमी लेकिन उभरती हुई प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

सड़कें और बदलाव

- सड़कें वस्तुओं, विचारों और लोगों की आवाजाही के लिए रास्ते के रूप में काम करती हैं, लेकिन इतिहासकार डेविड अर्नोल्ड उन्हें इससे कहीं अधिक के रूप में देखते हैं।
- अर्नोल्ड सड़कों को रैखिक शक्ति संरचनाओं की अभिव्यक्ति और सामाजिक अवलोकन, जुड़ाव और घर्षण के लिए महत्वपूर्ण स्थलों के रूप में देखते हैं।
- अलग-अलग क्षेत्र विशिष्ट कार्यों वाली सड़कों के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, बाईपास एक ऐसी सड़क है जो यातायात के सुचारू प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए निर्मित क्षेत्रों से बचती है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका में, ऐसी सड़कों को ट्रक मार्ग कहा जाता है, जिससे माल के परेशानी मुक्त परिवहन की सुविधा मिलती है।
- कई यूरोपीय, अमेरिकी और कुछ एशियाई देशों में, बाईपास को गोलाकार सड़कों या कक्षीय सड़कों के रूप में जाना जाता है।
- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद से, भारत में सड़कों ने महत्वपूर्ण गतिशीलता और सामाजिक संपर्क लाया है।
- परिवहन को सुविधाजनक बनाने के अपने इच्छित उद्देश्य के बावजूद, बाईपास सड़कों सहित शहरी ढांचागत विकास, अक्सर एकीकरण के बजाय सामाजिक और वर्ग-आधारित अलगाव पैदा करते हैं।
- बाईपास सड़कें अनजाने में रोजमर्रा की जिंदगी में सामाजिक-आर्थिक उपेक्षा का कारण बनती हैं, जिससे मौजूदा सामाजिक असमानताएं बढ़ती हैं।

PatriotIAS

प्रश्न 1: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: 1: यह संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख एजेंसी है जो विशेष रूप से जलवायु कार्रवाई और पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित है। 2: यह विकास पहलों पर सरकारों, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी करता है। उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं? (ए) केवल 1 (बी) केवल 2 (सी) 1 और 2 दोनों (डी) न तो 1 और न ही 2	उत्तर: (बी) केवल 2 स्पष्टीकरण: **कथन** 1 गलत है. हालाँकि यूएनडीपी जलवायु मुद्दों पर काम करता है, लेकिन यह जलवायु कार्रवाई के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख एजेंसी नहीं है। वह भूमिका जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की है। **कथन** 2 सही है. सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यूएनडीपी विभिन्न हितधारकों के साथ बड़े पैमाने पर काम करता है।
प्रश्न 2: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) का मुख्यालय स्थित है: (ए) जिनेवा, स्विट्जरलैंड (बी) न्यूयॉर्क शहर, यूएसए (सी) हेग, नीदरलैंड (डी) वियना, ऑस्ट्रिया	उत्तर: (बी) न्यूयॉर्क शहर, यूएसए स्पष्टीकरण: यूएनडीपी का मुख्यालय कई अन्य प्रमुख संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के साथ न्यूयॉर्क शहर में है।
प्रश्न 3: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के लिए निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख फोकस क्षेत्र है? 1: निरस्त्रीकरण और परमाणु अप्रसार को बढ़ावा देना 2: गरीबी उन्मूलन और असमानता कम करना। 3: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वार्ता को सुविधाजनक बनाना। नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें: (ए) केवल 1 (बी) केवल 2 (सी) केवल 3 (डी) केवल 1 और 3	उत्तर: (बी) केवल 2 स्पष्टीकरण: **कथन 1** : निरस्त्रीकरण और परमाणु अप्रसार अन्य संयुक्त राष्ट्र निकायों के दायरे में आते हैं। **कथन 2** : गरीबी और असमानता को संबोधित करना यूएनडीपी के मिशन का मुख्य फोकस है। **कथन 3** : हालांकि यूएनडीपी व्यापार से संबंधित पहलुओं पर काम करता है, लेकिन इसका ध्यान बड़े पैमाने पर व्यापार वार्ता को सुविधाजनक बनाने पर नहीं है।
प्रश्न 4: गुड़ी पड़वा, जिसे पारंपरिक नव वर्ष उत्सव के रूप में मनाया जाता है, मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस भारतीय राज्य से संबंधित है? 1.महाराष्ट्र 2.तमिलनाडु 3.पश्चिम बंगाल 4.गुजरात (ए) केवल 1 और 4 (बी) केवल 1, 2, और 3 (सी) केवल 1 (डी) केवल 2 और 3	उत्तर: (सी) केवल 1 स्पष्टीकरण: जबकि अन्य राज्यों में अपने स्वयं के नए साल के जश्न होते हैं, गुड़ी पड़वा विशेष रूप से महाराष्ट्र और पड़ोसी राज्यों के कुछ हिस्सों से जुड़ा हुआ है।
प्रश्न 5: गुड़ी पड़वा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: 1. यह भारत के कई हिस्सों में फसल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।	उत्तर: (बी) केवल 2 स्पष्टीकरण: **कथन 1** गलत है. गुड़ी पड़वा मार्च-अप्रैल के आसपास आता है, जो कई फसलों की कटाई से

PatriotICAS

2. फहराई गई 'गुड़ी' विजय और समृद्धि का प्रतीक है। 3. उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं? (ए) केवल 1 (बी) केवल 2 (सी) 1 और 2 दोनों (डी) न तो 1 और न ही 2	पहले का समय होता है। कुछ फ़सल उत्सव एक ही समय के आसपास मनाए जाते हैं, लेकिन उनके नाम और परंपराएँ अलग-अलग होती हैं। **कथन 2** सही है. गुड़ी विजय, समृद्धि और सौभाग्य का प्रतिनिधित्व करने वाला एक पारंपरिक प्रतीक है।
प्रश्न 6: निम्नलिखित में से कौन सा त्योहार गुड़ी पड़वा के उत्सव के साथ मेल खाता है? (ए)नवरात्रि (बी) उगादि (सी) होली (डी) पोंगल	उत्तर: (बी) उगादि स्पष्टीकरण: गुड़ी पड़वा और उगादि दोनों भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पारंपरिक नव वर्ष का प्रतीक हैं। चंद्र-सौर कैलेंडर के अनुसार वे अक्सर एक ही दिन पड़ते हैं।
प्रश्न 7: हिग्स बोसोन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है? (ए) यह एक प्रकार का विद्युत चुम्बकीय विकिरण है। (बी) यह मौलिक कणों को द्रव्यमान देता है। (सी) यह मजबूत परमाणु बल के लिए जिम्मेदार है। (डी) यह प्रकाश की गति से भी तेज चलती है।	उत्तर: (बी) यह मूलभूत कणों को द्रव्यमान देता है। स्पष्टीकरण: **कथन (ए)** गलत है: विद्युत चुम्बकीय विकिरण में प्रकाश, रेडियो तरंगें आदि शामिल हैं, हिग्स बोसोन नहीं। **कथन (बी)** सही है: हिग्स बोसोन हिग्स क्षेत्र से जुड़ा है, जो कुछ कणों के साथ संपर्क करके उन्हें द्रव्यमान देता है। **कथन (सी)** गलत है: मजबूत परमाणु बल प्रोटॉन और न्यूट्रॉन को एक साथ रखता है; इसके अपने स्वयं के बल वाहक कण (ग्लूऑन) होते हैं। **कथन (डी)** गलत है: कोई भी चीज़ प्रकाश की गति से तेज़ नहीं चल सकती।
प्रश्न 8: हिग्स बोसोन की प्रायोगिक खोज मुख्य रूप से की गई थी: (ए) फर्मी राष्ट्रीय त्वरक प्रयोगशाला (फर्मीलैब) (बी) अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) (सी) परमाणु अनुसंधान के लिए यूरोपीय संगठन (सीईआरएन) (डी) अरेसीबो वेधशाला	उत्तर: (सी) यूरोपीय परमाणु अनुसंधान संगठन (सीईआरएन) **स्पष्टीकरण:** फ्रांस-स्विट्जरलैंड सीमा पर स्थित CERN, दुनिया के सबसे शक्तिशाली कण त्वरक, लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर (LHC) का संचालन करता है। हिग्स बोसोन की खोज में एलएचसी महत्वपूर्ण था।
प्रश्न 9: हिग्स बोसोन इसका एक उदाहरण है: (ए) प्राथमिक कण (बी) न्यूट्रिनो (सी) अणु (डी) ब्लैक होल	उत्तर: (ए) प्राथमिक कण स्पष्टीकरण: हिग्स बोसोन को एक प्राथमिक कण माना जाता है, जिसका अर्थ है कि यह पदार्थ के मूलभूत, अविभाज्य निर्माण खंडों में से एक है।
प्रश्न 10: निम्नलिखित में से कौन सा राज्य मुख्य रूप से उगादी उत्सव से जुड़ा है? 1.आंध्र प्रदेश 2.कर्नाटक 3.तमिलनाडु (ए) केवल 1 और 2 (बी) केवल 2 और 3 (सी) केवल 1 और 3	उत्तर: (ए) केवल 1 और 2 स्पष्टीकरण: उगादी मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में मनाया जाता है। जबकि तमिलनाडु का अपना नया साल का त्योहार (पुथंडु) है, यह उगादि के साथ मेल नहीं खाता है।

PatriotIAS

(डी) 1, 2, और 3	
प्रश्न 11: उगादि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: 1.यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार चैत्र महीने की शुरुआत का प्रतीक है। 2.उगादी पचड़ी उत्सव के दौरान तैयार किया जाने वाला एक विशेष व्यंजन है, जो जीवन के विभिन्न स्वादों का प्रतीक है। उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं? (ए) केवल 1 (बी) केवल 2 (सी) 1 और 2 दोनों (डी) न तो 1 और न ही 2	उत्तर: (सी) 1 और 2 दोनों स्पष्टीकरण: **कथन 1** सही है. उगादी चैत्र महीने के पहले दिन को चिह्नित करता है, जो हिंदू चंद्र-सौर कैलेंडर में एक नए साल की शुरुआत का प्रतीक है। **कथन 2** सही है. उगादि पचड़ी छह विपरीत स्वादों से बनी एक अनूठी तैयारी है , जो जीवन की जटिलताओं का प्रतिनिधित्व करती है।
प्रश्न 12: उगादी उत्सव निम्नलिखित में से किस त्योहार से समानता रखता है? (ए) चेटी चंद (बी) छठ पूजा (सी) ओणम (डी) बिहू	उत्तर: (ए) चेटी चंद स्पष्टीकरण: उगादी, चेटी चंद, और भारत भर में कई अन्य क्षेत्रीय नव वर्ष त्यौहार अक्सर एक ही समय में आते हैं, क्योंकि वे पारंपरिक चंद्र-सौर कैलेंडर का पालन करते हैं।

PatrioticIAS